अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

यथार्थवाद और आदर्शवाद

- यह पूछा अक्सर विवाद रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के लिए यथार्थवाद का दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है या आदर्शवाद का।
- यथार्थवाद विचारों का यह मानना है कि युद्ध और हिंसा के राष्ट्रों के सम्बन्धों की स्थायी विशेषता बनाया जाता है।
- इन विचारकों का मानना व्यक्ति के इस विश्वास से है कि दूसरे लोग सदा उसे नष्ट करने की कोशिश करते रहते हैं और इसलिए उसे अपनी रक्षा की खातिर हर समय दूसरों को नष्ट करने को तैयार रहना चाहिए।
- यथार्थवादी दृष्टिकोण की तह में बुनियादी मान्यता यह है कि राष्ट्रों के बीच विरोध एवं संघर्ष किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं।
- यथार्थवाद शक्ति संघर्ष के स्थायित्व और उसकी सर्वव्यापकता को अपना मार्गदर्शक मानता है।
- जार्ज कैनन और हन्स मॉर्गेन्थाऊ आज के प्रमुख यथार्थवादियों में हैं।
- राष्ट्रीय हित और नैतिकता के आपसी सम्बन्ध के सवाल पर कैनन ने ऐसा विचार प्रकट किया है जिसे राबर्ट वुड के शब्दों में 'नैतिक संशयवाद' कहा जा सकता है।
- मॉर्गेन्थाऊ के अनुसार राष्ट्रीय हित की जरूरत के सामने किसी भी नैतिक सिद्धान्त का कोई महत्व नहीं है।
- यथार्थवादी दृष्टिकोण उस आदर्शवादी या यूटोपियन दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है जो शक्ति राजनीति को इतिहास का सिर्फ अलगाव या अस्थायी दौर समझता है।
- आदर्शवादी दृष्टिकोण यथार्थवाद को इतिहास के वास्तविक अर्थ की विकृति और

उनका दोषदर्शी भ्रष्ट रूप समझता है।

* आदर्शवाद का जन्म अठारहवीं सदी में हुआ था और साधारणतया यह माना जाता है कि अमरीकी तथा फ्रेंच क्रान्तियों का मुख्य प्रेरणास्रोत आदर्शवाद ही था।
* कोण्डरसेट ने एक ऐसी विश्व व्यवस्था की कल्पना पेश की जिसमें न युद्ध के लिए कोई स्थान था, न विषमता के लिए। और न अत्याचार के लिए।
* राजनीतिक यथार्थवाद और राजनीतिक आदर्शवाद में जिन बातों पर विरोध है उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि शक्ति समस्या।
* अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के वर्तमान काल में आदर्शवाद प्रथम विश्वयुद्ध के बाद वुडरो विल्सन के नेतृत्व में पुनर्जीवित हुआ।

Pol. Sc (Hons)
Part - II
Paper - II

Rama Kant Pandey
S.R.A.P. College
Bara chakiya
B.R.A.B.U (Muz)